दिनांक :- 11-05-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

एकाई :- 6:

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- छठी शताब्दी ईसा पूर्व स्त्रोत —

(8) पिप्लिवन के मेरिय — चन्द्रगुप्त मौर्य इसी वंश से संबंधित था
महावंश टीका के अनुसार कोशल नरेश विडुडभ के अत्याचारो से बचने के लिए शाक्यों की एक शाखा ने हिमालय की तराई में पिप्लीन नामक नगर बसाया था।

(9) मिथिला के विदेह : पहले राजतंत्रात्मक था बाद में गणतंत्र बन गया।
विदेह भी वज्जि संघ के सदस्य थे। राजधानी मिथिला की पहचान वर्तमान जनक पुर से की जाती है।

(10) वैशाली के लिच्छवी - गणतंत्र मे वास्तविक सत्ता कबिलाई अल्पतंत्र में निहित होती थी। गणतंत्र में राजा के अलावा गण के प्रमुख व्यक्ति भी राजा की उपाधि धारण करते थे, राजस्व वसूल करते थे, अपना खजाना तथा अपनी सेना रखते थे। लिच्छवियों में भी यही परम्परा थी जहाँ 7707 राजा, उपराजा, सेनापति तथा कोषाध्यक्ष होते थे।

गणतंत्रो में पुरोहित की भूमिका गौण होती थी।

लिच्छवि तथा शाक्य गणराज्य में शासक वर्ग एक ही गोत्र एवं एक ही वर्ण के होते थे। इनका प्रशासन तंत्र सरल था। इसमें राजा, उपराजा, सेनापति एवं भण्डागारिक (राजकोषाध्यक्ष) शामिल होते थे।

वैशाली के लिच्छवी के मामले में 7707 राजा प्रतिष्ठित थे, किंतु गणराज्यीय भावना के अनुकूल ब्राह्मणों को इसमें शामिल नहीं किया गया था।

Scanned with CamScanner

मौर्योतर काल मे मालवा तथा क्षुद्रको के गणराज्य मे ब्राह्मण तथा क्षत्रिय को नागरिकता प्राप्त भी थी किंतु दासों तथा शूद्रो को नही।

पंजाब तथा व्यास नदी के आस-पास एक ऐसा गणतंत्र था जिसके सभागार में ऐसे ही लोग सदस्य हो सकते थे जो कम से कम एक हाथी दे सकते है।

ग्रीक लेखको के अनुसार उत्तर पश्चिम के एक राज्य पाताल में एक विशिष्ठ प्रकार की व्यवस्था थी इसमे युद्ध के समय दो वंशानुगत राजा मिलकर शासन करते थे और शांति के समय शासन का संचालन वृद्ध जनो की परिषद द्वारा होता था।

इसी तरह सौभूति एवं अम्बष्ठ जैसे गणतंत्र में बच्चो के लालन-पालन का अधिकार राज्य अपने हाथ में ले लेता था ताकि बच्चे स्वस्थ पैदा हो।

मूषिक वंश एक ऐसा राज्य था जहां दास नही पाये जाते थे

गणराज्य की वास्तविक शक्ति उसकी केंद्रीय सभा या व्यवस्थापिका में ही निहित थी परंतु इसकी सदस्य संख्या निश्चित नहीं होती थी। जहां लिच्छवियों की सभा में 7707 सदस्य थे वहीं यौधेयों के 5000 तथा शाक्यों में मात्र 500।

सारे सदस्य सभाभवन अथवा संथागार में बैठते थे।

गणतंत्रों की सभा की कार्यवाही से संचालित के लिये गणपूरक नामक पदाधिकारी होता है।

मतों की गणना करने वाला अधिकारी शलाकाग्राहक नाम से जाना जाता था।

मतों की गणना ईरानी शासक साइरस (कुरु) (558-530 BC) भारत की ओर बढ़ा। उसने हिंदुकुश पर्वतमाला तक अपना विस्तार किया। यद्यपि भारतीय भूभाग को जीतने में उसे सफलता नहीं मिली। उसका उत्तराधिकारी डेरियस प्रथम (दारा प्रथम 552-486 BC) था। उसने कंबोज, पश्चिमी गंधार तथा सिंधु क्षेत्र पर विजय पाने में सफलता प्राप्त की।

Scanned with CamScanner

हेरोडोटस के अनुसार भारत दारा के साम्राज्य का बीसवां प्रांत था। यहां से दारा को उसके संपूर्ण राजस्व की तीसरा भागकर के रूप में प्राप्त होता था। यह धनराशि 360 टैलेण्ड सोना के बराबर थी।

इसका उत्तराधिकारी जरियस या क्षयहास था। ईरानी आक्रमण के परिणाम स्वरूप भारत में खरोष्ठी लिपी का प्रचार हुआ। उसने भी भारतीय प्रदेश पर अधिकार बनाये रखा और भारतीयों को सेना में नियुक्त किया।

सिकन्दर का आक्रमण —

सिंकदर ने 327-326 ईसा पूर्व में भारत पर आक्रमण किया सिकंदर ने सबसे पहले अस्पेसिओई (अश्वजाति) नामक राज्य को जीता। फिर उसने निशा (राज्य) को जीता तत्पश्चात अश्वक को जीता।

हेमचंद्र रायचौधरी के अनुसार इस समय इस क्षेत्र

मे 28 स्वतंत्र शक्तियाँ थी।

इन 28 राज्यों में सिंधु डेल्टा में बसा पाटल एक ऐसा राज्य था जहाँ यूनानी लेखकों के अनुसार स्पार्ट के समान द्वैराज्य प्रथा थी।

तक्षशीला के शासक अंभी ने बिना किसी प्रतिरोधी के ही आत्मसमपर्ण कर दिया। सिकंदर को पुष्पकलावति के संजय से भी समर्थन मिला। अभिसार के शासक ने भी सिकंदर के सामने आत्मसमर्पण कर दिया।

सिकंदर की सबसे बड़ी चुनौति पुरू राज्य के शासक पोरस ने दी पुरू राज्य झेलम तथा चिनाव नादियों के बीच में स्थित था। यद्यपि पोरस ने कठिन लड़ाई लड़ी परंतु उसे हार का सामना करना पड़ा। परंतु सिकंदर ने उसे अपने मित्र बना लिया तथा राज्य के साथ अनेक नये क्षेत्र भी उपहार में दिये।

प्लूटार्क के अनुसार इसमें 15 संघ राज्य उनके पाँच हजार बड़े नगर तथा अनेक ग्राम थे।

Scanned with CamScanner

सिकंदर के दो नगर बूकेफाला तथा निकाईया (विजयनगर) बसाये। पहला नगर उसने अपने घोड़े की स्मृति मे तथा दूसरा नगर पोरस पर विजय की स्मृति मे बनाया।

पोरस के विजय के पश्चात उसने चेनाब तथा रावी के बीच ग्लकिनाई तथा छोटे पोरस के राज्य को जीता। उस के बाद उसने संगल राज्य को ध्वस्त किया।

व्यास नदी से आगे उसकी सेना ने बढ़ने से इंकार कर दिया। सिकंदर वहाँ से वापस लौट गया। लौटते हुए उसने कुछ राज्यो पर विजय पाई जैसे। शिबोई। अग्रसेनी, मालव क्षुद्रक अम्बष्ठ, कठ, मुसिकनोई आदि। लौटते समय बेबीलोन मे 323 ईसा पूर्व मे उसकी मृत्यु हो गई।

भारतीय भू भाग पर सिकंदर की अंतिम विजय पातल राज्य के विरुद्ध था। सिकंदर ने अपने विजित भारतीय भू भाग को अपने मित्र शासको के मध्य वितरित कर दिया